L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- I
PAPER- 01
PSYCHOLOGY (HONOURS)

Dr. PRAMOD KUMAR SAHU
Assitant. Professor.
Guest Teacher.
V.S.J. College RAJNAGAR
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsahu.rbg2018@gmail.com.

TOPIC - The methods of Verbal. Learning the importance.

व्यक्ति जब किसी विषय को सीखता है तो उसके लिए वह कुछ प्रविधियों को अपनाता है। इसे सीखने की विधि कहते हैं। शाब्दिक सीखने की अनेक विधियाँ हैं। जिसे व्यक्ति व्यवहार में लाता है। कुछ विधियाँ जटिल तथा कुछ सरल होती हैं। और पाठ याद करने में सहायक होती हैं। इस संबंध में मनोवैज्ञानिकों ने सीखने की निम्न-विधियों की चर्चा की है।

(1) Whole method of learning :-

पाठ्य विषय को सीखने की अनेक विधियाँ हैं। उनमें आंशिक विधि भी एक है। अंश विधि से सीखने के लिए पाठ्य-विषय को कई टुकड़ों में बाँट कर सीखा जाता है। जैसे- कोई लम्बा पाठ या कविता है। उसे वह व्यक्ति कई खण्डों में बाँट कर पहले खण्ड को याद करने के बाद दूसरे और फिर तीसरे खण्ड को सीखते हैं। इसे ही अंश-विधि कहा जाता है। लम्बे विषय को सीखने के लिए अंश विधि ज्यादा उपयुक्त होती है। इसमें विषय के अनेक टुकड़ों को बारी-बारी से सीखा जाता है। और अन्त में पूरे विषय को एक साथ सीखा जाता है। पूर्ण विधि से सीखने के लिए पूरे पाठ्य-विषय को एक साथ सीखा जाता है। कुछ विषय ऐसे होते हैं, जिनके एक अंश दूसरे अंश से ज्यादा संबंधित होते हैं। ऐसी परिस्थिति में पूर्ण विधि से सीखना श्रेष्ठ होता है। इससे विषय के एक अंश का दूसरे अंशों से संबंधों का पता चलता है। किसी विषय को पूर्ण विधि से सीखा जाय या अंश विधि से इस बात को लेकर मनोवैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोगात्मक अध्ययन किया है।

Scanned with CamScanner

II

अंश विधि की अपेक्षा पूर्ण विधि ज्यादा उपयोगी है। जैसाकि पिल्सबरी की मान्यता आती है। कि पूर्ण विधि की अपेक्षा अंश विधि ज्यादा उपयुक्त होती है। वास्तव में दोनों विधियों में कुछ गुण एवं दोष है। किसी परिस्थिति में पूर्ण विधि ज्यादा उपयुक्त होती है। तो किसी परिस्थिति में अंश विधि।

विषय को सीखने में विषय का स्वरूप एक मुख्य कारक है। यदि विषय की सामग्री ये कई टुकड़ों में बाँटा जा सकता है तो ऐसी स्थिति में अंश विधि लाभदायक सिद्ध होती है जबकि विषय वस्तु अधिक लम्बी होती उसे सीखने में भी अंश विधि ज्यादा उपयुक्त होती है। पूर्ण विधि की एक वस्तु स्वरूप विशेषता यह होती है। कि प्रयोज्य सभी विषय के एक भाग को याद कर लेता है। तो उससे उसमें आत्मविश्वास होती है। जो उसके अंशों के सीखने में सहायक होती है। वह सरल भेदों के आधार पर भागों के भाग को भी सीखता हो अंश विधि को श्रेष्ठ मानते हैं। जिससे स्मरण की वृद्धि भी होती है। उनके सीखने के लिए भी यह उपयुक्त विधि है। अंश विधि लाभदायक होती है। लेकिन अभ्यास के कारण आत्मविश्वास हो जाने पर पूर्ण विधि श्रेष्ठ है। कुछ परिस्थितियों में अंश विधि की तुलना में पूर्ण विधि ज्यादा कारगर साबित होती है। तीव्र बुद्धि वाले लोगों के लिए पूर्ण विधि से सीखना आसान होता है। इस बात का समर्थन मैकू ज्योक (Mc Geoch) मार्क्स एवं रेबर्न ने अपने अध्ययनों के आधार पर किया है। विषय की सार्थकता भी विधि का एक प्रमुख कारक है। जब विषय अर्थपूर्ण होता है। और अधिक लम्बा नहीं होता है। तो पूर्ण विधि से सीखना आसान होता है। जब प्रयोज्य सब विधि के साथ अभ्यस्त हो जाते तो यह विधि लाभदायक साबित होती है।

(II) विराम तथा अविराम विधि से सीखना :-

इस विधि में छात्र केवल एक पाठ्य-विषय को एक टुकड़ों में बाँट कर सीखते हैं। परन्तु विराम विधि में पाठ्य-विषय को नहीं, सीखने के लिए निर्धारित समय को ही कई भागों में बाँट कर सीखते हैं। जैसे, यदि अध्ययन के लिए तीन घंटे की अवधि निर्धारित है तो उसे आधे-आधे घंटा करके छः भागों में बाँटा जा सकता है। या फिर एक-एक घंटा करके तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। इस विधि से सीखने के लिए समय को टुकड़ों में बाँट कर प्रत्येक बीच विश्राम लिया जाता है और विश्राम के बाद पुनः सीखते हैं। इससे सीखने वाले व्यक्ति की स्मरण-शक्ति मजबूत होती है।

अविराम विधि में प्रत्येक बिना विश्राम किये लगातार पाठ की अभ्यास करती है। इस पाठ का अभ्यास तब तक करता है जब तक कि उसे पूरा पाठ न याद नहीं हो जाता है। इस विधि में समय की बर्बादी नहीं होती है।

विराम विधि तथा अविराम विधि के महत्व को देखने के लिए अनेक मनोवैज्ञानिकों ने प्रयोगात्मक अध्ययन किया है। अविराम विधि की अपेक्षा विराम विधि से सीखना ज्यादा उपयोगी होता है। लार्ज (Lorge) ने दर्पण आरेखन पर गति कौशल का अध्ययन किया, उन्होंने यह देखा कि गति कौशल में विराम विधि ही ज्यादा उपयुक्त होती है। निरर्थक पदों की सूची पर अविराम एवं विराम विधि से अध्ययन किया। प्रयोग अध्ययन से यह विराम विधि को ही समर्थन मिला। वास्तव में अविराम विधि से सीखने में थकान एवं ऊब अधिक ज्यादा उत्पन्न होती है, जबकि विराम विधि में थकान एवं काफी अवरोध उत्पन्न नहीं होता है।

(ii)

स्वाभाविक समता कायम रहती है। और उत्पादन में ह्रास नहीं होता है। मनोवैज्ञानिकों ने इस बात का समर्थन किया है। अविराम विधि से सीखने वाले स्मृति-चिन्हों को मजबूत होने का मौका नहीं मिलता है। पहले प्रभाव में जो स्नायु-प्रवाह बनता है। वह लगातार प्रभावों के आघात से कमजोर होता है।

(iii) पुनर्निरीक्षण एवं आवृत्ति करना विधि से सीखना :-

किसी विषय को सीखने के लिए बार-बार दुहराने की आवश्यकता होती है। एक बार विषय को सीख लेने के बाद उसे दुहराना आवृत्ति करना कहलाता है। यह सीखने की एक उत्तम अच्छी विधि है। यदि आवृत्ति करने में काफी कुछ भूलता है तो पुनः उसकी पुनर्निरीक्षण करना है। जिससे उसे पता चल जाता है कि आवृत्ति करने के बाद वह सीखे गये विषय के किस अंश को भूल गया था, अतः आवृत्ति करना ही पुनर्निरीक्षण की क्रिया का आधार रहती है कुछ लोगों ने तो इसे अलग नहीं माना है आवृत्ति करने के अंग के रूप में स्वीकार किया है। सीखने के लिए पढ़ने और आवृत्ति करने दोनों का महत्व [illegible] पर काफी प्रभाव पड़ता है। जहाँ यह इस [illegible] होने के बाद [illegible] नहीं दिया हो धीरे-धीरे [illegible] की प्राप्ति हो जाता है। [illegible] पर एक [illegible] है। [illegible] परिस्थिति [illegible] पर [illegible] किया जाता है। [illegible] को छोड़ दिया जाता है।

By. Pramod Kumar Sahu,

Date - 16/05/2020